एडवरटाइजिंग सर्विस की स्थापना की। इसके जरिए वो एशिया भर के विज्ञापनों को रेडियो-सिलोन के लिए बुक करने लगे। एवज में उन्हें मिलने लगा भारी कमीशन और रेडियो-सिलोन को करोड़ों का रिवेन्यू। उस दौर में विज्ञापन रेडियो पर स्टूडियो में उपस्थित उद्घोषक द्वारा ही पढ़कर किए जाते थे। बाद में इसी एजेंसी की उप-एजेंसी ने विज्ञापनदाताओं के लिए विज्ञापन ही नहीं, कार्यक्रमों का निर्माण भी आरंभ कर दिया। इन कार्यक्रमों की आधारशिला भी हिन्दी-फ़िल्मी गाने ही थे। इस एजेंसी द्वारा निर्मित तत्कालीन कार्यक्रम 'ओवलतीन फुलवारी', 'कोलगेट रंग-तरंग', 'लक्स सितारों के साथी', और 'बिनाका गीतमाला' ने सारे एशिया की अपनी गिरफ्त में लिया- मनमोहन कृष्ण, हमीद सायानी, बलराज (सुनील दत्त), मुरली मनोहर और अमीन सायानी जैसे विश्व-विख्यात ब्रॉडकास्टर दुनिया को दिये। रेडियो सिलोन के स्थानीय उद्घोषणों, विजयकिशोर दुबे, गोपाल शर्मा और शिवकुमार सरोज ने फिल्म संगीत को विभिन्न ढांचों में ढालकर ऐसे लाजवाब प्रोग्राम बनाए जो श्रोताओं के दिलों पर आज तक छाये हुए हैं। रेडियो पर, रेडियो सिलोन आना, उसके बिकने की गारंटी बन चुका था। ये वो दौर था जब मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन था रेडियो और फिल्में। इनका युवा-पीढ़ी पर इतना ज्यादा प्रभाव था कि हर युवा दिलीप कुमार की तरह फिल्म स्टार बनना चाहता था, या अमीन सायानी की तरह रेडियो स्टार।

भारत के श्रोताओं के दिलो-दिमाग पर झंडे गाड़ती पड़ोसी देश की इस लोकप्रियता और कामयाबी ने आल इंडिया रेडियो, जो1956 में आकाशवाणी नाम धारण कर चुका था, के दिग्गजों में खलबली सी मचा दी। उन्होंने फिल्म संगीत की अहमियत को पहचाना और अपनी भूल को सुधारने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इस दृढ़ निश्चय का अमलीजामा पहनाने के लिए प्रसारण की कद्दावर हस्तियों पंडित नरेन्द्र शर्मा, गोपालदास, केशव पंडित के नेतृत्व में रेडियो सिलोन की लोकप्रियता का तोड़ ढूंढने के लिए अनेकानेक बैठकें हुई। विशेषज्ञों की राय ली गई। इन बैठकों के नतीजे के रूप में सामने आई, एक बेहद सुन्दर परिकल्पना इसका नाम रखा गया 'विविध-भारती-सेवा' आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम जिसमें पांचों ललित कलाओं का समावेश होगा। गीत, संगीत, नृत्य, नाट्य और चित्र। 3 अक्टूबर को इस सेवा की शुरूआत भारत की आर्थिक राजधानी बम्बई (अब मुंबई) से की गई।

पंडित नरेन्द्र शर्मा ने इस सेवा का उद्घाटन गीत लिखा, अनिल बिस्वास ने उसे संगीत से संवारा और मन्ना डे ने इसे अपनी सुरीली आवाज से निखारा... बोल थे- 'नाच रे मयूरा SS' ... इस सेवा के पहले उद्घोषक बने शील कुमार। विविध-भारती के शुरूआती कार्यक्रम थे फौजी भाइयों के लिए फरमाइशी प्रोग्राम- 'जयमाला' और झलकियों और नाटकों के लिए 'हवा महल'।

विविध भारती सेवा में पंख तो लग गये- पर उसकी परवाज़ रेडियो सिलोन की बुलंदियों तक न पहुंच सकी। वजह? फिल्मी गाने और उन पर आधारित प्रोग्राम तो होने लग गए पर विज्ञापन अभी भी वर्जित थे। विज्ञापन और प्रायोजित-कार्यक्रम जो रेडियो सिलोन की कमाई का आधार थे, उनका निर्माण बाहर की एजेंसियों और निर्माताओं से करवाया जाता था। इससे कार्यक्रमों के प्रारूपों और प्रस्तुतिकरण में ताज़गी और विविधता रहती थी। इस बात को समझने में विविध भारती को 10 वर्ष लग गये। तब कहीं जाकर वर्ष 1967 विविध भारती पर विज्ञापन प्रसारण सेवा का प्रारंभ हुआ। और इसी वर्ष रेडियो सिलोन-श्रीलंका ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन बना... और इसके पहले उद्घोषकों में मैं भी शामिल हुआ।

विविध भारती-देश की सुरीली धड़कन की पायदान पर तेज़ी से तब चढ़ी जब इसके कार्यक्रम और प्रसारण में रेडियो-सिलोन की तर्ज पर; चूल-मूल परिवर्तन किया गया। यही नहीं रेडियो-सिलोन की तरह विविध-भारती ने भी बाहरी-निर्माताओं और एजेंसियों को विज्ञापन और प्रायोजित कार्यक्रम बनाने के लिए आमंत्रित किया। इसमें बहुत से वो निर्माता भी शामिल हुए जिन्होंने रेडियो सिलोन को लोकप्रियता के शिखर तक पहुंचाया था उनमें सबसे प्रमुख थे भारत में कमर्शियल-ब्रॉड कास्टिंग के शहंशाह अमीन सायानी। रेडियो सिलोन की बिनाका गीतमाला जब रेडियो सिलोन छोड़कर विविध भारती में आई तो देश की सुरीली-धड़कन में नगाड़ों की गूंज भी शामिल हो गई। प्रायोजित कार्यक्रमों और विज्ञापनों की विविध भारती पर जैसे बाढ़ सी आ गई।

साढ़े 7 वर्ष रेडियो सिलोन में कार्य करने के बाद मैं जब 1974 के मध्य में बम्बई पहुंचा तो विविध भारती अपने पूरे शबाब पर आ चुकी थी। मैंने अपना सफर बतौर फ्रीलांचर अपने गुरु अमीन सायानी की छत्रछाया में शुरू किया। और विविध भारती को देश की सुरीली धड़कन बनने की यात्रा का न केवल गवाह बल्कि उसका हिस्सा बना।

शुरूआत मैंने फिल्म के प्रायोजित कार्यक्रमों से की कुछ अकेले और कुछ अमीन साहब के साथ युगल बंदी में की। जिनमें प्रमुख थीं : अलीबाबा चालीस चोर, कसौटी, रजिया सुल्तान, प्रतिज्ञा, कुरबानी, मैं इंतकाम लूंगा, रोटी कपड़ा और मुकान और शोले, 'मुझे याद आया', 'आप और हम', 'पॉलीडोर संगीतधारा' जैसे छोटे-मोटे साप्ताहिक कार्यक्रम लिखते और बोलते हुए- मेरी झोली में आया वो प्रोग्राम जिसने मुझे अंतरराष्ट्रीय ख्यति तो दिलवाई ही और फ्री-लान्सर की हैसियत से मुझे पूरी तरह स्थापित कर दिया। ये प्रोग्राम था- 'मोदी के मतवाले राही', जिसको 1979-80 में विश्व के सर्वश्रेष्ठ प्रायोजित कार्यक्रमों की कैटेगरी में अमरीकन क्लीओ अवार्ड से नवाजा गया। इसमें मुझे 'प्रमुख-किरदार' और 'प्रस्तुतकर्ता' के रूप में भी पुरस्कृत किया गया।

कालान्तर में 'हवामहल' और 'मोदी के मतवाले राही' विविध भारती के ऐसे